क्रमबद्ध बनाम प्रादेशिक उपागम

डा. संजय कुमार

क्रमबद्ध बनाम प्रादेशिक उपागम-

जब भी हम किसी विषय का अध्ययन करते हैं तब हमारे सामने यह प्रश्न उपस्थित होता है कि हम उस विषय के संबंध में क्या पढ़े और कैसे पढ़ें ? इसी तरह भूगोल विषय का अध्ययन करते समय भी यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि भूगोल में क्या पढ़े और कैसे पढ़ें? इसमें क्या पढ़े का संबंध विषय की विषय वस्तु से है जबकि कैसे पढ़ें का संबंध विधितंत्र से है। भूगोल में विधितंत्र के संदर्भ में दो प्रचलित उपागम हैं- क्रमबद्ध उपागम और प्रादेशिक उपागम। इसे क्रम से systematic approach and regional approach के नाम से जानते हैं।

क्रमबद्ध उपागम के अंतर्गत किसी एक भौगोलिक तत्व का विस्तृत अध्ययन किया जाता है। दूसरे शब्दों में – The Systematic study of a single Geographical element in world perspective is known as systematic approach in geography.

World wide- Study of different continents

Continent- Study of different countries

Country- - Study of different states

State- - Study of different districts

District- Study of different Panchayat

Panchayat- Study of different villages

DO NOT COPY PROF SANJAY KUMAR JHA

भौगोलिक अध्ययन के अंतर्गत कई सारे तत्व हमारे सामने मौजूद होते हैं । इसके अंतर्गत भूगर्भिक संरचना से लेकर जलवायु ,मिट्टी , क़षि , खनिज, जनसंख्या, व्यापार – व्यवसाय, परिवहन जैसे पक्ष शामिल हैं। इनमें से किसी भी एक तत्व का जब हम एक छोटे से क्षेत्र से लेकर विश्व स्तर तक अध्ययन करते हैं तब वह क्रमबद्ध उपागम का हिस्सा बन जाता है। उदाहरण के लिए -यदि हम एक तत्व के अंतर्गत तापमान को लेते हैं तब इसमें

गांव – पंचायत से शहर से लेकर विभिन्न शहरों ,जिलों, राज्यों, देशों, महादेशों के तापमान का अध्ययन करके हम विश्व-स्तर तक तापमान का अध्ययन ले जा सकते हैं। कहने का तात्पर्य है कि यदि कोई एक तत्व का अध्ययन एक छोटे से क्षेत्र से पंचायत स्तर से आरंभ करते हैं तब सभी पंचायतों को मिलाकर वह अध्ययन एक जिला के लिए जानकारी प्रदान करने में सक्षम होता है। जब विभिन्न जिलों की जानकारी इस संदर्भ में इकट्ठा कर दी जाती है तो वह एक राज्य के लिए जानकारी हो जाती है।इसी तरह विभिन्न राज्यों से देश, विभिन्न देशों से महादेश और अंततः सारे विश्व के तापमान यानी किसी एक भौगोलिक तत्व का अध्ययन इस तरह से किया जाता है।

भौगोलिक अध्ययन का दूसरा उपागम प्रादेशिक उपागम कहलाता है ,जिसे regional approach के नाम से भी हम जानते हैं। इसके अंतर्गत किसी एक प्रदेश के विभिन्न भौगोलिक तत्वों का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है दूसरे शब्दों में -The systematic study of different geographical elements of a region is known as regional approach in geography.

हम सभी जानते हैं कि इस पृथ्वी पर 7 महादेश और कई देश हैं। सभी देशों की अलग अलग विशेषताएं हैं। इन देशों के अतिरिक्त जब इन देशों के साथ ही जब हम किसी राज्य के प्रादेशिक अध्ययन या प्रादेशिक उपागम की बात करते हैं तब उसके अंतर्गत उसके विभिन्न भौगोलिक पक्षों - भूगर्भिक संरचना, उच्चावच ,अपवाह, जलवायु, मिट्टी ,कृषि, खनिज, जनसंख्या, अधिवास, व्यापार, व्यवसाय और परिवहन साधनों का क्रमबद्ध अध्ययन इसमें शामिल किया हुआ होता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि क्रमबद्ध उपागम के अंतर्गत किसी एक भौगोलिक तत्व तथा प्रादेशिक उपागम के अंतर्गत प्रदेश के विभिन्न भौगोलिक तत्वों का अध्ययन किया जाता है। दोनों उपागमों को हम मानव शरीर से भी समझ सकते हैं। यदि मानव शरीर पर कहीं किसी प्रकार का घाव हो जाता है तब उसके इलाज के लिए अस्पताल जाते हैं या डॉक्टर के पास जाते हैं। ऐसी स्थिति में डॉक्टर के पास दो विकल्प मौजूद होता है। यह दोनों विकल्पों को हम क्रमबद्ध उपागम और प्रादेशिक उपागम के संदर्भ में समझ सकते हैं। पहला उपागम के अंतर्गत यदि हम एक फिजिसियन डॉक्टर के पास जाते हैं तब वह दवा के जरिए उस घाव को ठीक करने का प्रयास करता है। उसके द्वारा लिखी गई दवा लेने के बाद वह दवा शरीर में जाकर जहां पर घाव मौजूद होता है उसको ठीक करने का काम करता है। दूसरे विकल्प के अनुसार जब हम किसी सर्जन के पास जाते हैं तब उस घाव को

DO NOT COPY PROF. SANJAY KUMAR, ARA

ठीक करने के लिए वह उसकी सर्जरी करने की बात करता है। ऐसी स्थिति में वह दवा के बजाय उस घाव की सर्जरी कर वहां से उसे हटाने का प्रयास कर उपचार की बात करता है। इसी प्रकार से हम भौगोलिक तत्वों का अध्ययन भी करने का प्रयास करते हैं। यदि हम किसी एक भौगोलिक तत्व का अध्ययन करने जाते हैं तब हमारे पास दो विकल्प मौजूद होता है कि या तो हम क्रमबद उपागम के जरिए उसका अध्ययन करें या फिर प्रादेशिक उपागम के जरिए उसका अध्ययन करें।

DO NOT COPY PROF. SANJAY KUMAR, ARA